

डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन, व्याख्यान 8, रहस्योद्घाटन 4 और 5

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह सत्र 8, प्रकाशितवाक्य 4 और 5, एक परिचय है।

रहस्योद्घाटन के अध्याय 4 और 5 के साथ, हम एक ऐसे खंड पर आते हैं जो चरित्र में कुछ अलग है जैसा कि हमने पहले ही अध्याय 2 और 3 से कई बार संकेत दिया है। अध्याय 2 और 3 बहुत सारी कल्पनाओं का उपयोग करके अधिक सरल विवरण की तरह हैं। अभी भी, लेकिन सात ऐतिहासिक चर्चों की स्थिति का एक सीधा विवरण या मूल्यांकन।

अब, अध्याय 4 से शुरुआत करते हुए, हम पुस्तक के सर्वनाशी खंड पर पहुँचते हैं। यही दृष्टि उचित है। हमने अध्याय 1 में एक उद्घाटन दर्शन देखा, लेकिन अब, अध्याय 4 से शुरू करते हुए, अध्याय 4 एक जॉन की शुरुआत करता है जो पुस्तक के अंत तक, कम से कम अध्याय 22 के कुछ हिस्सों तक विस्तारित होगा।

कुछ लोगों ने अध्याय 4 और 5 को पुस्तक के आधार या पुस्तक के धार्मिक केंद्र के रूप में लेबल किया है। इसमें संभवतः कुछ सच्चाई है। विशेषकर, अध्याय 4 और 5 ने चर्च के अनगिनत भजनों और गीतों को प्रेरित किया है।

आपको पवित्र, पवित्र, पवित्र, भगवान सर्वशक्तिमान भगवान, या वध किया गया मेमना योग्य है, या उसे कई मुकुट पहनाए गए, उसके सिंहासन पर मेमना, स्वर्गीय गान जैसे भजनों को याद करने के लिए बहुत अधिक सोचने की ज़रूरत नहीं है ड्रम, आदि, आदि। आप अन्य गीतों के बारे में सोच सकते हैं जो प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 और 5 से मौखिक रूप से प्रेरित हैं। अध्याय 4 और 5 को देखने से पहले मैं क्या करना चाहता हूँ, और उम्मीद है, जैसे-जैसे हम इन दोनों को देखने में आगे बढ़ेंगे अध्याय, हम देखेंगे कि वे एक साथ क्यों हैं। अध्याय 4 और 5 को संभवतः दो अलग-अलग अध्यायों के रूप में बिल्कुल भी नहीं माना जाना चाहिए।

अध्याय 4 और 5 कथा के भीतर एक दूरदर्शी अंश, एक खंड का निर्माण करते हैं। लेकिन मुझे समग्र कार्य, समग्र सामग्री और प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 और 5 के समग्र अभिविन्यास के बारे में कई प्रारंभिक टिप्पणियाँ करने दीजिए। शाब्दिक रूप से, पहला बिंदु जो मैं कहना चाहता हूँ वह साहित्यिक दृष्टिकोण से है, अध्याय 4 और 5 इस प्रकार प्रदान करते हैं शेष दर्शन के लिए सेटिंग या तैयारी। वह अध्याय 6 से 22 तक है।

अध्याय 6 से 22 में बस इतना ही होता है, जो इस दूरदर्शी खंड से उत्पन्न और प्रवाहित होता है। शेष रहस्योद्घाटन में वर्णित मोक्ष के सभी आशीर्वाद इसी खंड से उत्पन्न होते हैं। वे सभी निर्णय जिनके बारे में हम अध्याय 6 से 19 में पढ़ते हैं, अध्याय 6 और सात मुहरों से शुरू करते हुए, ये सभी निर्णय अध्याय 4 और 5 से जारी किए गए हैं। इसके अलावा, इसे देखने का एक और तरीका

यह है कि चीजें कैसे बनती हैं किताब के बाकी हिस्सों में काफी तीव्र है, जैसा कि हम भगवान के फैसले को सामने आते हुए देखते हैं, जैसा कि हम देखते हैं कि कभी-कभी चीजें थोड़ी अव्यवस्थित हो जाती हैं, उदाहरण के लिए, एक हवाई जहाज में बैठने जैसा जो अशांति से भरा है और सभी प्रकार की अशांति चल रही है और इधर-उधर फेंका जा रहा है।

प्रकाशितवाक्य 4 और 5 हमें याद दिलाते हैं कि कॉकपिट में, सिंहासन कक्ष में, भगवान अपने सिंहासन पर बैठा है, और वह अध्याय 6 से 19 तक होने वाली सभी चीजों के नियंत्रण में है। उसकी निगरानी के अलावा कुछ भी नहीं होता है आँख। तो, इसका मतलब यह है कि हम रहस्योद्घाटन को अच्छे और बुरे के बीच कुछ द्वैतवाद के संदर्भ में नहीं पढ़ सकते हैं, जैसे कि अच्छे की शक्तियों और बुराई की शक्तियों के बीच एक द्वैतवादी संघर्ष है, जिसका परिणाम अनिश्चित है जब तक कि यह अंत में हल नहीं हो जाता .

अध्याय 4 और 5 शुरुआत में हमें याद दिलाते हैं कि अच्छाई और बुराई के बीच कोई द्वंद्व नहीं है, लेकिन शुरुआती बिंदु ईश्वर अपने सिंहासन पर विराजमान है, जो दुनिया में होने वाले सभी मामलों और घटनाओं पर संप्रभु है। दूसरा, प्रकाशितवाक्य 4 और 5 कार्य करता है और अध्याय 6 से 22 के लिए दूसरे तरीके से तैयारी करता है। 4 और 5 में, हम स्वर्ग के सभी लोगों को अपने सिंहासन पर बैठे भगवान की पूजा करते हुए देखते हैं।

स्वर्ग को अध्याय 4 और 5 में चित्रित किया गया है। और फिर, थोड़ा सा समर्थन करने के लिए, जब आप 4 और 5 पढ़ते हैं, तो स्थान स्पष्ट रूप से स्वर्ग में है। और हम रहस्योद्घाटन के शेष भाग में यह देखने जा रहे हैं कि जॉन क्या करेगा। प्रकाशितवाक्य का शेष भाग प्रदर्शित करेगा कि जॉन का दृष्टिकोण स्वर्ग और पृथ्वी के बीच आगे-पीछे घूमता रहता है। अध्याय 4 और 5 स्वर्ग में जॉन के साथ शुरू होते हैं, जहां पूरा स्वर्ग भगवान की संप्रभुता को स्वीकार करता है।

स्वर्ग वह स्थान है जहाँ सारा स्वर्ग झुकता है और ईश्वर की संप्रभुता को स्वीकार करते हुए उसकी पूजा करता है। समस्या यह है कि पृथ्वी ऐसा नहीं करती। पृथ्वी परमेश्वर की संप्रभुता का विरोध करती है।

पृथ्वी ईश्वर की संप्रभुता को स्वीकार करने से इंकार करती है, विशेषकर रोमन साम्राज्य की। इसके बजाय रोम अपनी संप्रभुता का दावा करता है और ईश्वर की पूर्ण संप्रभुता, जिसे स्वर्ग में स्वीकार किया जाता है, को अस्वीकार करता है और यहां तक कि विद्रोह भी करता है और उसका विरोध भी करता है। तो स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जो भगवान की संप्रभुता को स्वीकार करता है और भगवान की पूजा करता है।

पृथ्वी एक ऐसी जगह है जहां काफी हद तक ऐसा नहीं है, खासकर रोम जैसे साम्राज्य और राज्य। तो, पुस्तक में अध्याय 4 और 5 जो प्रश्न उठाता है वह यह है कि ईश्वर की संप्रभुता जिसे स्वर्ग में पूरी तरह से स्वीकार किया जाता है, वह अंततः पृथ्वी पर कैसे स्वीकार की जाएगी? स्वर्ग में परमेश्वर की आराधना कैसे होती है, और अंततः वह पृथ्वी पर कैसे होगी? एक ऐसी पृथ्वी पर जो इसे स्वीकार करने से इंकार करती है, एक ऐसी पृथ्वी पर जो इसका विरोध करती है। प्रकाशितवाक्य 6 से 22 का शेष भाग उस प्रश्न का उत्तर है।

6 से 22 में वर्णन किया गया है कि अध्याय 4 और 5 में स्वर्ग का दृश्य अंततः पृथ्वी पर कैसे घटित होता है। यह निर्णयों की एक श्रृंखला के माध्यम से होता है जो अंततः अध्याय 21 और 22 तक ले जाता है, जिसमें एक नया स्वर्ग और नई पृथ्वी, एक नई रचना पर, पूरी पृथ्वी अंततः भगवान की संप्रभुता को स्वीकार करती है। और हर जनजाति, भाषा, राष्ट्र और भाषा के लोग अंततः उसके सिंहासन पर भगवान की पूजा करते हुए उभरते हैं।

तो, अध्याय 4 और 5 की स्थिति में, अंततः, एक नई रचना में, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में, स्वर्ग में स्वीकार की गई भगवान की संप्रभुता अंततः पृथ्वी पर स्वीकार की जाती है। एक पृथ्वी, जो वर्तमान समय में, इसका विरोध करती है, इसे अस्वीकार करती है, और इसके विरुद्ध विद्रोह करती है। एक तरह से, रहस्योद्घाटन के अध्याय 4 से 22 में, मैं इस अंतर्दृष्टि का श्रेय रिचर्ड बॉखम को देता हूँ, लेकिन मुझे विश्वास है कि वह सही हैं।

एक अर्थ में, प्रकाशितवाक्य 4 से 22 को मैथ्यू अध्याय 6 में प्रभु की प्रार्थना के भाग के विस्तार के रूप में देखा जा सकता है, जहां यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं, प्रार्थना करो, हमारे पिता जो स्वर्ग में हैं, तुम्हारा नाम खोखला हो, तुम्हारा राज्य आए, तुम जैसा स्वर्ग में किया जाएगा वैसा ही पृथ्वी पर भी किया जाएगा। तो, स्वर्ग एक ऐसी जगह है जहां भगवान का नाम पूजा में खोखला कर दिया जाता है। स्वर्ग वह स्थान है जहाँ ईश्वर का राज्य है, जहाँ ईश्वर की इच्छा साकार होती है, लेकिन इसे पृथ्वी पर अभी तक स्वीकार नहीं किया गया है।

परमेश्वर का नाम अभी भी पृथ्वी पर खोखला नहीं हुआ है। परमेश्वर की इच्छा और परमेश्वर का राज्य अभी भी पृथ्वी पर पूरी तरह से पूरा नहीं हुआ है। यह प्रभु की प्रार्थना का हिस्सा है।

एक अर्थ में, रहस्योद्घाटन इस बात की अभिव्यक्ति है कि यह कैसे घटित होने वाला है और प्रभु की प्रार्थना अंततः कैसे कार्यान्वित होगी। तीसरा, अध्याय 4 और 5 हमें याद दिलाते हैं कि प्रकाशितवाक्य भी मुख्य रूप से पूजा के बारे में एक किताब है, न कि अंत समय के बारे में। मैंने इसे कई संदर्भों में कहा है, लेकिन मैं इस पर अधिक जोर नहीं दे सकता।

हां, रहस्योद्घाटन अंत समय को संदर्भित करता है, लेकिन हमें भविष्य में क्या होने वाला है इसकी विशेषाधिकार प्राप्त जानकारी देने या हमें ऐसी जानकारी देने के लिए नहीं जो हमारी जिज्ञासा को संतुष्ट करती है और हमें समयरेखा और चार्ट और इस तरह की चीजें बनाने की अनुमति देती है। संक्षेप में, रहस्योद्घाटन पूजा के बारे में एक किताब है। अध्याय 4 और 5 हमें फिर से याद दिलाते हैं कि यह सवाल उठाता है कि वास्तव में हमारी पूजा के योग्य कौन है? हमारी निष्ठा के योग्य कौन है? क्या यह रोम है? पहली सदी के ईसाइयों के लिए, क्या यह रोम और सम्राट थे जिन्होंने पूरी दुनिया के लिए शांति, स्थिरता, समृद्धि और आशीर्वाद प्रदान करने वाले के रूप में निष्ठा और पूजा का दावा किया था? प्रकाशितवाक्य 4 और 5 हमें पहले से याद दिलाते हैं कि रहस्योद्घाटन जिन प्रश्नों से जूड़ेगा और परमेश्वर के लोगों को जिनसे जूझना होगा उनमें से एक यह है कि वास्तव में हमारी पूजा के योग्य कौन है। हमारी निष्ठा के योग्य कौन है? कोई अन्य मनुष्य, कोई अन्य लोग, कोई अन्य राष्ट्र, कोई अन्य इकाई हमारी पूजा के योग्य नहीं है, केवल ईश्वर और मेम्ना।

किसी और चीज की पूजा करना मूर्तिपूजा से कम नहीं है। प्रकाशितवाक्य 4 और 5 हमें सच्ची वास्तविकता की झलक देते हैं कि केवल परमेश्वर और मेम्रा, जो सिंहासन पर बैठे हैं, सभी चीजों पर संप्रभु हैं; केवल वे ही हमारी पूजा के योग्य हैं। संख्या 4, और तीसरे से संबंधित, प्रकाशितवाक्य 4 और 5 है। हमने पहले ही अध्याय 1 में ऐसा होते देखा है, लेकिन अब हम इसे 4 और 5 में और भी अधिक देखते हैं। अध्याय 4 और 5 इसका सीधा प्रतिदावा है रोमन साम्राज्य के दावे।

अध्याय 4 और 5, क्योंकि यह ईश्वर को उसके सिंहासन पर बैठा हुआ, पूजा के योग्य और समस्त सृष्टि के रूप में प्रस्तुत करता है, उसकी संप्रभुता को स्वीकार करता है, और मेम्रे को भी। अध्याय 4 और 5 रोम के दावों से विरोधाभास रखते हैं। मैं पहले भी इसका उल्लेख कर चुका हूँ, लेकिन इसे दोबारा दोहराना जरूरी है क्योंकि मैं इसे अक्सर सुनता हूँ।

कई लोग अब भी मानते हैं कि प्रकाशितवाक्य प्रतीकात्मक भाषा में लिखा गया था ताकि ऐसा न हो कि अगर यह गलत हाथों में पड़ गया तो इसका संदेश छिप जाएगा। यदि यह बहुत स्पष्ट और प्रत्यक्ष होता, तो इससे ईसाइयों पर और भी अधिक उत्पीड़न हो सकता था। हालाँकि, मैं कल्पना नहीं कर सकता कि कोई भी रोमन सम्राट अध्याय 4 और 5 को पढ़ेगा और परेशान नहीं होगा क्योंकि उनके शासनकाल, उनके सिंहासन और उनके स्वयं के दावों पर विवाद हो रहा था।

आपके पास दो सिंहासन नहीं हो सकते। आप परमेश्वर और मेमने को, सभी चीजों पर प्रभुत्व रखने वाले, और सीज़र को अपने सिंहासन पर नहीं बिठा सकते। यह काम नहीं करता।

इसलिए, प्रकाशितवाक्य 4 और 5 संघर्ष करते हैं और रहस्योद्घाटन को रोमन साम्राज्य के दावों के साथ प्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष संघर्ष में लाते हैं। संख्या 5. प्रकाशितवाक्य 4 और 5 में दो अलग-अलग दृश्य हैं, लेकिन वे निरंतर हैं। उन दोनों की सेटिंग एक ही है, भगवान का सिंहासन कक्ष, और सिंहासन एक प्रकार का केंद्रीय बिंदु है जिसके चारों ओर दोनों दृश्य घूमते हैं।

अध्याय 4 में, भगवान अपने सिंहासन पर बैठे हैं, और उन्हें ब्रह्मांड के निर्माता के रूप में पूजा जाता है। अध्याय 5 में, हम एक मेम्रे को पाते हैं जो पुस्तक को खोलता है और जो इसी तरह भगवान के सिंहासन पर बैठता है और जिसकी पूरे स्वर्ग में पूजा की जाती है। तो, अध्याय 4 और 5 फिर से एक निरंतर दर्शन, दो दृश्य हैं, लेकिन एक ही दर्शन का हिस्सा हैं और एक ही सेटिंग है, जो स्वर्गीय सिंहासन कक्ष है।

तो, यह कहने के बाद, इस खंड को पेश करने और खुद को अध्याय 4 और 5 की ओर उन्मुख करने के एक तरीके के रूप में, मैं जो करना चाहता हूँ वह प्रत्येक अध्याय को देखना और उनके मुख्य कार्यों पर विचार करना है, कुछ विवरणों की जांच करना है। और पुराने नियम पर भी ध्यान केंद्रित करें, विशेष रूप से पुराने नियम का उपयोग जो कई छवियों के पीछे निहित है। जैसे ही हम अध्याय 4 शुरू करते हैं, 4 से 22 के परिचय के माध्यम से एक और बात बतानी है, इसलिए, न केवल अध्याय 4 और 5 पर ध्यान केंद्रित करें, बल्कि 4 से 22 तक। अध्याय 4 रहस्योद्घाटन के दूरदर्शी खंड की शुरुआत करता है।

अध्याय 4 से 22 तक पहुंचने के विभिन्न तरीकों को वर्गीकृत करने और व्यवस्थित करने का प्रयास करने के कई प्रयास किए गए हैं। सबसे लोकप्रिय तरीका जो उभरा है वह पूरे चर्च के इतिहास में वर्गीकृत करना है। पूरे चर्च के इतिहास में ईसाइयों ने जिस तरह से रहस्योद्घाटन की व्याख्या की है, उसे देखते हुए, हम इसे कई लेबलों के अनुसार वर्गीकृत करते हैं। वस्तुतः हर टिप्पणी जो मैंने उठाई और पढ़ी है, इन लेबलों का उपयोग करती है, और मैं निश्चित रूप से यह नहीं कहना चाहूंगा कि वे अनुपयोगी या गलत हैं या ऐसा कुछ भी, लेकिन मैं बस इस बारे में थोड़ी बात करना चाहता हूँ कि हम 4 से 22 तक कैसे पहुंचते हैं। .

प्रकाशितवाक्य पर विद्वान और टिप्पणीकार, फिर से, आप लगभग किसी को भी चुन सकते हैं और परिचय पढ़ सकते हैं, और आपको प्रकाशितवाक्य 4 से 22 तक पहुंचने और व्याख्या करने के तरीकों के रूप में इन विभिन्न श्रेणियों से परिचित कराया जाएगा। धारणा यह है कि लगभग किसी भी दृष्टिकोण को इसमें रखा जा सकता है इनमें से एक या अधिक श्रेणियाँ। उदाहरण के लिए, टीकाकारों का मानना है कि प्रकाशितवाक्य 4 से 22 की व्याख्या करने के कई दृष्टिकोणों को प्रीटेरिस्ट दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है।

प्रीटेरिस्ट दृष्टिकोण मूल रूप से प्रकाशितवाक्य 4 से 22 तक सब कुछ कहता है, या इसका अधिकांश भाग केवल पहली शताब्दी को संदर्भित करता है। अर्थात्, यह महज़ पहली सदी में क्या चल रहा था उस पर एक टिप्पणी है। यह प्रकाशितवाक्य 4 से 22 तक की घटनाओं का वर्णन करने का एक सामान्य तरीका है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि 4 से 22 केवल यह वर्णन कर रहा है कि पहली शताब्दी में क्या हो रहा था। इसे प्रीटेरिस्ट दृष्टिकोण कहा जाता है। एक अन्य दृष्टिकोण को ऐतिहासिक दृष्टिकोण कहा जाता है।

दिलचस्प बात यह है कि मुझे अब इस दृष्टिकोण का अधिक वर्णन नहीं मिलता है, और जब मैं इसका वर्णन करूंगा तो आप समझ जाएंगे कि ऐसा क्यों है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण मूलतः हमारे द्वारा देखे गए सात चर्चों के विचारों में से एक के समान है। हमने एक लोकप्रिय दृष्टिकोण कहा था जो अब बहुत लोकप्रिय नहीं लगता है, लेकिन अतीत में एक लोकप्रिय दृष्टिकोण यह था कि सात चर्चों ने चर्च के इतिहास की सात अवधियों की भविष्यवाणी की थी।

कुछ लोग प्रकाशितवाक्य 4 से 22 को वास्तव में चर्च के इतिहास से लेकर आधुनिक काल तक की अवधि की भविष्यवाणी के रूप में पढ़ते हैं। अब, जाहिर है, इसमें कठिनाई यह है कि जैसे-जैसे इतिहास आगे बढ़ता है और बदलता है, इसमें संशोधन होता रहता है। वास्तव में, कठिनाई यह भी है कि आप अक्सर अध्याय 4 से 22 तक सभी खंड पा सकते हैं जो चर्च के इतिहास के लगभग किसी भी काल में फिट हो सकते हैं।

तो, इस कारण से, यह ऐतिहासिक दृष्टिकोण कि रहस्योद्घाटन पहली शताब्दी में शुरू होने वाले चर्च के इतिहास का एक पूर्वानुमान है, जो आधुनिक दिन तक ले जाता है, और फिर अंत में ईसा मसीह के दूसरे आगमन में समाप्त होता है, मुझे कोई लोकप्रिय नहीं मिला अब और देखें। एक तीसरा दृष्टिकोण आदर्शवादी दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है। आदर्शवादी दृष्टिकोण कहता है

कि रहस्योद्घाटन वास्तव में पहली शताब्दी या चर्च के इतिहास की विशिष्ट घटनाओं का जिक्र नहीं कर रहा है, बल्कि इसके बजाय, रहस्योद्घाटन को भगवान और शैतान या अच्छे और बुरे के बीच लड़ाई के प्रतीकात्मक चित्रण के रूप में अधिक समझा जाना चाहिए।

और इसलिए, रहस्योद्घाटन की सभी छवियों और प्रतीकों को एक तरह से ट्रांस-टेम्पोरल के रूप में लिया जाना चाहिए। हां, वे पहली सदी पर लागू होते हैं, लेकिन वे किसी भी सदी पर लागू हो सकते हैं, जिसमें वे चर्च और शैतान के बीच, भगवान और शैतान के बीच, पूरे चर्च में संघर्ष को दर्शाने के एक प्रतीकात्मक तरीके के रूप में प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 से 22 की छवियों का वर्णन करते हैं। इतिहास, जो ईसा मसीह के दूसरे आगमन तक ले जाता है। तो, छवियां केवल पहली शताब्दी से आगे बढ़ती हैं, लेकिन वे सामान्य प्रतीक हैं, ईश्वर और बुराई के बीच लड़ाई का एक प्रतीकात्मक चित्रण है, जिस पर अंततः ईश्वर विजयी होता है, और किसी एक घटना या व्यक्ति तक सीमित नहीं है। या समय अवधि।

अंतिम दृश्य को प्रीटेरिस्ट दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है। अंतिम दृष्टिकोण को भविष्यवादी दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है। अर्थात्, 4 से 22 तक, यदि सभी नहीं तो अधिकांश, अभी तक घटित नहीं हुआ है।

यह अभी तक नहीं हुआ है। यह पूरी तरह से भविष्य है, और चर्च अभी भी इंतजार कर रहा है और अध्याय 4 से 22 तक की प्रतीक्षा कर रहा है। अब, आप देखेंगे कि मैंने शुरुआत में इस दृष्टिकोण के बारे में बहुत कम कहा था, और ऐसा इसलिए है क्योंकि इस दृष्टिकोण का हमारी मदद करने में कुछ मूल्य है देखें कि चर्च ने किस तरह से चीजों की व्याख्या की है और हमें इस बात पर ध्यान देने में मदद की है कि हम प्रकाशितवाक्य 4 से 22 तक कैसे समझ सकते हैं, यह बहुत सीमित है क्योंकि यह केवल एक अस्थायी समझ पर ध्यान केंद्रित करता है जैसे कि यह सबसे महत्वपूर्ण विशेषता और वर्गीकरण है कि हम कैसे हैं रहस्योद्घाटन की व्याख्या करें।

हम रहस्योद्घाटन देखने जा रहे हैं, ध्यान इस बात पर नहीं है कि ये घटनाएँ कब घटित होती हैं। वास्तव में, मुझे लगता है कि कुछ ईसाई, या प्रकाशितवाक्य के कुछ व्याख्याकार इस बात से प्रस्त हो जाते हैं कि ये घटनाएँ इन श्रेणियों में से किसी एक में अस्थायी रूप से कहाँ फिट होती हैं। इसके बजाय, हमारा ध्यान केवल इस बात पर रहेगा कि पाठ क्या कहता प्रतीत होता है? और ये दर्शन कैसे कार्य कर रहे हैं? वे ईसाइयों से क्या कह रहे हैं? एशिया माइनर की पहली सदी के ईसाइयों ने इन्हें कैसे समझा होगा? तो शायद, जैसा कि हमने पहले ही संकेत दिया है, शायद हमारी व्याख्याएँ कभी-कभी इनमें से दो या तीन दृष्टिकोणों में फिट बैठती हैं।

और रहस्योद्घाटन को उनमें से केवल एक में पिरोने का प्रयास करना शायद अनावश्यक है। लेकिन फिर, यह सुझाव देना कि ये सबसे महत्वपूर्ण श्रेणियां हैं, रहस्योद्घाटन को सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं तक सीमित कर देता है। ये घटनाएँ अस्थायी रूप से कब घटित होती हैं? इसलिए, जैसा कि मैंने कहा, हम अपना ध्यान इस बात पर अधिक केंद्रित करेंगे कि हम इन ग्रंथों को उनके साहित्यिक संदर्भ में कैसे समझते हैं। उन्होंने सात चर्चों की स्थिति को कैसे संबोधित किया होगा? तो, अध्याय चार, रहस्योद्घाटन अध्याय चार, मैं जो करना चाहता हूँ वह विशेष रूप

से चार पांच है, मैं अध्याय चार और पांच को पढ़ने में समय बिताना चाहता हूँ। फिर से, मैं चाहता हूँ कि आप पाठ सुनें।

मैं चाहता हूँ कि आप, एक अर्थ में, जैसा कि जॉन ने किया था, और जैसा कि वह शायद अपने पाठकों के लिए चाहता था, एक अर्थ में आप यह देखने में सक्षम हों कि कुछ विवरणों के बारे में बात करने का प्रयास करने से पहले क्या हो रहा है। क्योंकि हम केवल इस पाठ को विच्छेदित नहीं करना चाहते हैं और सूक्ष्मदर्शी के नीचे विवरणों की जांच नहीं करना चाहते हैं, ऐसा न हो कि हम दृष्टि की ताकत खो दें और इसे देखें, छवियाँ और उनकी सुंदरता, फिर से, हमारी आँखों के सामने से गुजर रही हैं और हमें मदद कर रही हैं दृष्टि के प्रभाव को महसूस करें। तो, अध्याय 4 उचित दृष्टि की तरह शुरू होता है।

इसके बाद मैं ने दृष्टि की, और मेरे सामने स्वर्ग का एक द्वार खुला हुआ था। और जो आवाज मैं ने पहिले तुरही के समान मुझ से बातें करते हुए सुनी थी, वह कहती थी, यहां आ, और मैं तुझे दिखाऊंगा कि इसके बाद क्या होना चाहिए। तुरंत, मैं आत्मा में था, और मेरे सामने स्वर्ग में एक सिंहासन था जिस पर कोई बैठा था।

और जो वहां बैठा था उसका रूप जैस्पर और कारेलियन का सा था। पन्ने के समान एक इंद्रधनुष सिंहासन के चारों ओर घिरा हुआ था। सिंहासन के चारों ओर 24 अन्य सिंहासन थे, और उन पर 24 बुजुर्ग बैठे थे।

वे श्वेत वस्त्र पहने हुए थे, और उनके सिरों पर सोने के मुकुट थे। सिंहासन से बिजली की चमक, गड़गड़ाहट और बादलों की गड़गड़ाहट निकल रही थी। सिंहासन के सामने सात दीपक जल रहे थे।

ये परमेश्वर की सात आत्माएँ थीं। और सिंहासन के सामने कोई था, जो कांच के समुद्र के समान दिखाई देता था, जो बिल्लौर के समान स्पष्ट था। सिंहासन के चारों ओर बीच में चार जीवित प्राणी थे, और उनके आगे और पीछे आँखें ही आँखें थीं।

पहला जीवित प्राणी शेर जैसा था। दूसरा बैल जैसा था। तीसरे का चेहरा मनुष्य जैसा था और चौथा उड़ते हुए उकाब जैसा था।

इन चार जीवित प्राणियों में से प्रत्येक के छह पंख थे और चारों ओर, यहाँ तक कि पंखों के नीचे भी, आँखों से ढका हुआ था। वे दिन-रात गाते रहते थे, पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, जो था, और जो है, और जो आनेवाला है। जब जीवित प्राणी उस की महिमा, आदर और धन्यवाद करते हैं जो सिंहासन पर बैठा है, और जो सर्वदा जीवित है, तब चौबीस प्राचीन उसके सामने जो सिंहासन पर बैठा है गिरेंगे, और जो युगानुयुग जीवित है उसकी आराधना करेंगे।

वे सिंहासन के सामने अपने मुकुट रखते हैं, और कहते हैं, हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू महिमा, आदर, और सामर्थ पाने के योग्य है, क्योंकि तू ने सब वस्तुएं सृजीं, और वे तेरी ही इच्छा से सृजीं

गई, और उनका अस्तित्व है। तो यह उचित दृष्टि की शुरुआत है। और जैसा कि हमने कहा है, इसकी शुरुआत स्वर्ग में होती है।

और रहस्योद्घाटन, जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, जॉन के स्वर्ग में होने के बीच एक प्रकार का विकल्प होगा, अन्य समय में वह स्पष्ट रूप से पृथ्वी पर होगा या पृथ्वी पर होने वाली चीजों को देखेगा, फिर वह फिर से स्वर्ग में वापस आ जाएगा, और हम मैं इसके प्रति सचेत रहने का प्रयास करूंगा। लेकिन स्वर्गीय दृष्टि से आरंभिक बिंदु उपयुक्त है क्योंकि, याद रखें, एक सर्वनाश के रूप में, जॉन वास्तविकता पर एक स्वर्गीय दृष्टिकोण प्रदान करने का प्रयास कर रहा है। जैसा कि उनके पाठक अनुभवजन्य भौतिक दुनिया को देखते हैं, जॉन को अब स्वर्ग में देखने की अनुमति है।

परदा हटा दिया जाता है, धूँघट हटा दिया जाता है, आवरण हटा दिया जाता है ताकि जॉन एक और वास्तविकता देख सके। यह कोई अलग, अलग वास्तविकता नहीं है, जैसे कि जॉन किसी स्वप्निल काल्पनिक दुनिया में प्रवेश करता है, लेकिन यह सच्ची वास्तविकता है। यह पाठक की स्थिति है जिसका विस्तार अब उस स्वर्गीय वास्तविकता को शामिल करने के लिए किया गया है जो इसे प्रभावित करती है और इसके पीछे छिपी है।

तो अब जॉन की दृष्टि स्वर्ग के खुलने से शुरू होती है ताकि वह अब स्वर्ग में झाँक सके और एक पूरी नई वास्तविकता देख सके जो उसे और उसके पाठक के वर्तमान स्थिति के दृष्टिकोण को आकार देगी। यह देखना महत्वपूर्ण है कि जॉन अध्याय 4 की शुरुआत स्वर्ग के खुले होने, स्वर्ग में एक दरवाजे के खुले होने और फिर एक आवाज सुनने के संदर्भ से करता है। यह सर्वनाशकारी साहित्य का अभिन्न अंग था।

कई अन्य यहूदी सर्वनाशों में, आपको अक्सर द्रष्टा या दूरदर्शी के स्वर्ग में जाने और उसे संबोधित करने वाली आवाज़ सुनने का संदर्भ मिलता है। स्वर्ग खुलने के अनेक उल्लेख हैं। वास्तव में, आप बाद में प्रेरितों के काम अध्याय 7 की पुस्तक में पाएंगे कि स्वर्ग के खुलने का संदर्भ है।

पतरस को स्वर्ग का दर्शन खुला हुआ है। मैंने अन्यत्र यह भी तर्क दिया है कि यीशु, अपने बपतिस्मे के बाद, जब स्वर्ग को खुला देखता है, तो उसे सर्वनाशकारी दृष्टि आ रही होती है। अध्याय 4 में, यीशु के प्रलोभन, और मैथ्यू में अध्याय 4, 1-11, ये सभी यीशु के सर्वनाशकारी दर्शन का हिस्सा हैं, बिल्कुल जॉन की तरह।

और इसलिए, स्वर्ग का यह उद्घाटन सर्वनाशकारी साहित्य का अभिन्न अंग था। अधिक विशेष रूप से, ऐसा लगता है कि इसकी पृष्ठभूमि ईजेकील की पुस्तक में है, एक पुस्तक, जो यशायाह के साथ, एक पुस्तक है जो पूरे रहस्योद्घाटन में जॉन के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वास्तव में, जो दिलचस्प है वह जॉन द्वारा पुराने नियम के उपयोग के बारे में एक संक्षिप्त टिप्पणी करना है; दिलचस्प बात यह है कि जब जॉन यशायाह की किताब पर आधारित होता है, तो वह अक्सर विषयगत रूप से उस पर आधारित होता है।

अर्थात्, विभिन्न अनुभागों में, वह मुख्य पाठ का सहारा लेगा जो उस विषय को संप्रेषित करता है जिसे वह उस अनुभाग में संप्रेषित करने का प्रयास कर रहा है। जब जॉन यहजेकेल का अनुसरण करता है, तो वह काफी हद तक यहजेकेल की पुस्तक के क्रम में ही इसका अनुसरण करता है। और इसलिए, अध्याय 4 में, खुले स्वर्ग का संदर्भ ईजेकील अध्याय 1 और श्लोक 1 से मिलता जुलता है। और ध्यान दें कि यह शुरू होता है, तेरहवें वर्ष में, यह यहजेकेल 1 श्लोक 1 है, तेरहवें वर्ष में, पांचवें के चौथे महीने में। एक दिन, जब मैं कबार नदी के किनारे बंधुओं के बीच में था, तब आकाश खुल गया, और मैं ने परमेश्वर के दर्शन देखे।

और संभवतः, उस कविता ने ही अन्य सर्वनाशों के लिए प्रेरणा प्रदान की। और मैंने पहले क्रिस्टोफर रोलैंड नामक एक ब्रिटिश विद्वान के काम का उल्लेख किया था, जिनकी पुस्तक का शीर्षक द ओपन हेवन था। और वह प्रदर्शित करता है कि कैसे यहजेकेल 1.1 सर्वनाशकारी दर्शन की धारणा के लिए बहुत प्रभावशाली था।

और निश्चित रूप से, जॉन अब अपनी स्वयं की सर्वनाशकारी दृष्टि का वर्णन करने के लिए विशेष रूप से ईजेकील 1.1 का उपयोग करता है। लेकिन वह स्पष्ट करना चाहते हैं कि अब उनके पास ईजेकील के अनुरूप दूरदर्शी अनुभव है। तो, आवाज सुनकर स्वर्ग खुल जाता है, सर्वनाश साहित्य का एक सामान्य विषय, जहां अब पर्दा हटा दिया गया है, और जॉन को पर्दे के पीछे देखने और स्वर्गीय वास्तविकता की झलक देखने की अनुमति है।

दिलचस्प बात यह है कि इस बिंदु पर, जॉन वास्तव में स्वर्ग में चढ़ जाता है। और मुझे वापस जाने दो। स्वर्ग के दर्शन की इस अवधारणा के लिए जॉन न केवल यहजेकेल पर निर्भर है, बल्कि हम अध्याय छह में यशायाह को भी देखने जा रहे हैं।

लेकिन चूँकि स्वर्ग खुला है, जॉन को यहाँ आने के लिए कहा गया है। उम्मीद है कि हममें से अधिकांश को यह एहसास होगा कि यह उत्साह या इस जैसी किसी चीज़ का संदर्भ नहीं है। ये तो आम बात है।

यह एक दूरदर्शी अनुभव का हिस्सा है। स्वर्ग खुला है और द्रष्टा फिर स्वर्ग में चढ़ जाता है या उसे एक दूरदर्शी अनुभव पर ले जाया जाता है। कई यहूदी सर्वनाशों में एक सामान्य विषय वह है जिसे अक्सर मर्कवा सर्वनाश या आरोहण के सर्वनाश कहा जाता है।

यानी, आप अक्सर वह पाते हैं जो आपको यहां जॉन में नहीं मिलता है, आप कुछ अन्य यहूदी सर्वनाशों में पाते हैं, जहां वे अक्सर विभिन्न स्वर्गों से चढ़ते हैं और संख्या भिन्न होती है। कभी-कभी यह तीन हो जाती है, कभी-कभी यह सात हो जाती है, कभी-कभी यह उससे भी अधिक हो जाती है। लेकिन द्रष्टा विभिन्न स्वर्गों में चढ़ता है और प्रत्येक में कुछ न कुछ देखता है।

और लक्ष्य अंतिम स्वर्ग, सातवें स्वर्ग या जो भी हो, तक पहुंचना है, जो कि भगवान का सिंहासन कक्ष है। हमारे पास जॉन के स्वर्ग के स्तरों तक चढ़ने का कोई संदर्भ नहीं है। हमने बस जॉन को स्वर्ग में बुलाया है, जो कि भगवान का सिंहासन कक्ष या भगवान का मंदिर है जहां भगवान रहते हैं।

इस आवाज़ से जॉन को बुलाया जाता है और अपनी सर्वनाशी दृष्टि की तैयारी में, वह अब स्वर्ग पर चढ़ जाता है। अध्याय चार के शेष भाग में यह वर्णन किया जाएगा कि जॉन ने इस दूरदर्शी अनुभव में क्या देखा। और फिर, यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि जॉन ईजेकील और विशेष रूप से अध्याय एक और दो से बहुत अधिक प्रेरणा लेता है, जो कि ईजेकील की स्वर्गीय दृष्टि है।

और वह यशायाह अध्याय छह पर बहुत जोर देता है, जो यशायाह को एक दूरदर्शी, स्वर्गीय दूरदर्शी अनुभव में चित्रित करता है और यहजेकेल की तरह भगवान के सिंहासन के आसपास विभिन्न प्राणियों को देखता है। तो फिर, जॉन स्पष्ट कर रहा है कि उसकी दृष्टि को यहजेकेल और यशायाह की तरह ही समझा जाना चाहिए। जॉन जो देखता है वह वही स्वर्गीय सिंहासन कक्ष है।

और जॉन जो अनुभव करता है उसे यशायाह और ईजेकील के समान ही समझा जाना चाहिए, क्योंकि इस सर्वनाशकारी दृष्टि में जॉन एक तरह से यशायाह और यहजेकेल का कार्यभार अपने ऊपर ले लेता है। जैसा कि मैंने कहा, जॉन अपने शेष कार्य में इन दो पुस्तकों, विशेष रूप से ईजेकील और यशायाह का उपयोग करेगा। यशायाह अधिक विषयगत रूप से, वह पूरी किताब में आगे बढ़ेगा, उन ग्रंथों पर चित्रण करेगा जो उसके विषयों का समर्थन करते हैं, लेकिन ईजेकील, वह लगभग उसी क्रम में अनुसरण करेगा जिसका ईजेकील ने स्वयं अनुसरण किया है।

दूसरी बात यह भी दोहराने लायक है, यह कहकर कि जॉन ने अपने स्वयं के दृष्टिकोण की प्रस्तुति के लिए ईजेकील और यशायाह को आकर्षित किया है, मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि जॉन के पास एक वास्तविक, मुझे लगता है, वास्तविक दूरदर्शी अनुभव है, लेकिन उस अनुभव को संप्रेषित किया गया है उसे ईजेकील और यशायाह जैसी छवियों और भाषाओं में। और फिर जॉन, मुझे लगता है, ईजेकील और यशायाह के पास वापस जाता है और उन ग्रंथों की भाषा का सहारा लेता है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि उसने वास्तव में क्या देखा था और पुराने नियम के ग्रंथों और उन लोगों के साथ संबंध स्थापित किया था जिनके पास उसके समान दूरदर्शी अनुभव थे। अपना। तो, उसकी अपनी दृष्टि है, फिर भी वह अपने पुराने नियम के पूर्ववर्तियों की भाषा में लिखता है, लेकिन अब वह दिखाता है कि कैसे उसके पूर्ववर्तियों के दर्शन भी अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व के प्रकाश में पूरे हो गए हैं।

जॉन के दर्शन की कुछ विस्तृत विशेषताओं को देखने से पहले कहने लायक एक और बात यह है कि यह वाक्यांश जो श्लोक 4 से शुरू होता है, इसके बाद, या इन चीजों के बाद, फिर से, मैं इस भाषा को स्पष्ट करना चाहता हूँ जिसे हम देखेंगे पूरे प्रकाशितवाक्य में, इसके बाद, मैंने देखा, या इन चीजों के बाद, मैंने देखा और यह देखा। उस भाषा का उद्देश्य कालानुक्रमिक क्रम बताना नहीं है कि ये चीजें कैसे घटित होंगी जैसे कि अध्याय 2 और 3 की घटनाएँ पहले घटित हुईं, और फिर जब वे समाप्त हो गईं, तो अध्याय 4 और 5 घटित हुईं। इसके बजाय, यह वह क्रम है जिसमें जॉन लिखता है, या यह वह क्रम है जिसमें उसने इन चीजों को देखा था।

तो, संदेश सुनने के बाद, अध्याय 1 में उसने जो किया उसे देखने के बाद, महान मसीह के दर्शन, और अध्याय 2 और 3 के संदेशों को सुनने और लिखने के बाद, जॉन इसे देखता है, और जॉन अब अपने दूरदर्शी अनुभव को अध्यायों में दर्ज करेगा 4 और 5. अध्याय 4 के बारे में ध्यान देने योग्य पहली बात सिंहासन का उल्लेख है। यह अध्याय 4 और 5 में होने वाली हर चीज के लिए

केंद्र बिंदु, केंद्र बिंदु और लगभग गुरुत्वाकर्षण खिंचाव प्रदान करेगा। सिंहासन महत्वपूर्ण है क्योंकि, वास्तव में, हमें पहले ही अध्याय में सिंहासन और इसके महत्व से परिचित कराया जा चुका है। 1, लेकिन अब, अध्याय 4 और 5 में जॉन की दृष्टि में, यह उभरना और अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाना शुरू कर देता है, जहां सिंहासन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह संप्रभुता और शासकत्व का प्रतीक है, जो फिर से एक महत्वपूर्ण विशेषता या विषय का सुझाव देगा रहस्योद्घाटन के शेष भाग में। वास्तव में नियंत्रण में कौन है? वास्तव में ब्रह्मांड का संप्रभु शासक कौन है? वास्तव में सभी राष्ट्रों और विश्व पर संप्रभु शासक कौन है? क्या यह सीज़र है या कोई और? तो, फिर से, यहाँ सिंहासन का उल्लेख तुरंत ही एक प्रति-साम्राज्यवादी दावा होगा।

आपके पास दो सिंहासन नहीं हो सकते। यह या तो ईश्वर अपने सिंहासन पर बैठा है, या सीज़र अपने सिंहासन पर बैठा है। या तो ईश्वर पूजा और निष्ठा के योग्य है, या सीज़र पूजा और निष्ठा के योग्य है।

तो, नियंत्रण में कौन है? वास्तव में ब्रह्मांड का संप्रभु शासक कौन है? यह प्रश्न पहले से ही अध्याय 4 में जॉन के दर्शन के प्रारंभिक भाग में भगवान के सिंहासन की उपस्थिति से उठाया गया है। वास्तव में, सिंहासन शब्द, यदि आप गिनती करते हैं, तो सिंहासन शब्द अकेले प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 में 13 बार प्रकट होता है और फिर से आएगा अध्याय 4 और अध्याय 5 में भी घटित होगा। दूसरा तरीका यह भी विरोधाभासी है कि हमें पहले ही अध्याय 2 में शैतान के सिंहासन से परिचित कराया जा चुका है। और इसलिए, एक बार फिर, सिंहासन की छवि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

नियंत्रण में कौन है? ईश्वर की संप्रभुता का मुकाबला अंततः शैतान से नहीं बल्कि सीज़र और किसी अन्य मानव शासक से होता है। लेकिन सबसे आगे अध्याय 4, जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, हमें याद दिलाता है कि प्रकाशितवाक्य में कोई द्वैतवाद नहीं है, जैसे कि इस प्रतियोगिता का परिणाम तब तक संदेह में है जब तक हम अंत तक नहीं पहुँच जाते। लेकिन पहले से ही हमारा परिचय यीशु और मेमने और सर्वोच्च सिंहासन, स्वर्गीय सिंहासन पर बैठे भगवान से हो चुका है, और इस धरती पर अभी इसे क्रियान्वित किया जाना बाकी है, एक ऐसी धरती जो इसका मुकाबला करती है।

एक अन्य प्रश्न जो अध्याय 4 में इन छंदों को पढ़ते समय अनिवार्य रूप से हमारे मन में उठता है, वह यह है कि यह कब होता है? जॉन क्या वर्णन कर रहा है? क्या वह अतीत में ऐतिहासिक रूप से किसी विशिष्ट दृश्य का वर्णन कर रहा है? क्या वह बता रहा है कि अभी क्या हो रहा है? क्या यह भविष्य में होने वाली कोई घटना है? जब आप इसे पढ़ेंगे तो इसमें क्या दिलचस्प है, यह वास्तव में स्पष्ट नहीं है। ऐसा कब होता है इसका कोई स्पष्ट अस्थायी संकेतक नहीं है। या क्या हमें शायद इसे और अधिक अस्थायी रूप से लेना चाहिए, कि जॉन किसी भी समय अध्याय 4 में एक विशिष्ट घटना का वर्णन नहीं कर रहा है, बल्कि बस एक वास्तविकता का वर्णन कर रहा है जो हर समय बिल्कुल सच है।

भगवान को पूरे स्वर्ग में अपने सिंहासन पर बैठे हुए दर्शाया गया है, जब ऐसा होता है तो जॉन को इसकी चिंता किए बिना अपनी संप्रभुता को स्वीकार करना पड़ता है। या क्या कोई निश्चित समय

है जब यह स्पष्ट होता है? फिर, यह दिलचस्प है कि यह कब हो रहा है, इसके बारे में किसी विशिष्ट अस्थायी संकेत का अभाव है। फिर, शायद हम किसी विशिष्ट लौकिक क्षण तक सीमित नहीं हैं।

इसलिए, जहां तक यह पाठ घटित होता है, इसका कोई विशिष्ट कालक्रम नहीं है। जो कुछ चल रहा है उसके संबंध में अध्याय 4 के बारे में उल्लेख करने योग्य दूसरी बात यह है कि जब आप इसे ध्यान से पढ़ते हैं तो यह मेरे लिए दिलचस्प है, एक बात जो आपके अंग्रेजी अनुवाद छिपाते हैं वह तथ्य यह है, और यह आवश्यक है क्योंकि हमें यह करना है अंग्रेजी में आमतौर पर यदि आप ग्रीक पाठ को पढ़ने में सक्षम हैं और अध्याय 4 के ग्रीक पाठ को पढ़ सकते हैं, तो बहुत, बहुत, बहुत कम संकेतक क्रियाएं हैं जो आंदोलन और गतिविधि का सुझाव देती हैं। उनमें से केवल कुछ ही हैं।

एक सिंहासन से आने वाली गड़गड़ाहट और बिजली से जुड़ा है। लेकिन इसके अलावा, ऐसी बहुत कम क्रियाएं हैं जो अध्याय 4 में वास्तव में चल रही गतिविधियों और कार्यों और आंदोलन का वर्णन करती हैं। इसके बजाय, अध्याय 4 लगभग एक स्थिर दृश्य है। यह स्वर्गीय वातावरण का अत्यधिक वर्णनात्मक है, लेकिन एक अर्थ में, यह काफी स्थिर है।

मुझे लगता है कि इसका कारण यह है कि अध्याय 4 संभवतः अध्याय 5 के लिए सेटिंग प्रदान करता है। दिलचस्प बात यह है कि ग्रीक पाठ पर वापस जाएं, यदि आप ग्रीक पाठ पढ़ सकते हैं, जब आप अध्याय 5 पर पहुंचते हैं, तो अचानक, वहां सभी प्रकार की सूचक क्रियाएँ हैं। यानी वे क्रियाएँ जो स्वर्ग में चल रहे कार्यों और गतिविधियों को दर्शाती हैं। तो फिर, अध्याय 4 अध्याय 5 के लिए पृष्ठभूमि और सेटिंग प्रदान करता है। इसका मतलब यह है कि हमारे ध्यान का मुख्य ध्यान अध्याय 5 में होना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि अध्याय 4 महत्वपूर्ण नहीं है।

हैं, निश्चित रूप से यह है। लेकिन अध्याय 4 मुख्य रूप से अध्याय 5 में जो होने वाला है उसके लिए सेटिंग और पृष्ठभूमि प्रदान करता है। और यहीं पर मेमना अपने सिंहासन पर उभरता है और यहीं से मुख्य कार्रवाई शुरू होती है। और अध्याय 4 में सब कुछ उसी तक ले जा रहा है। यह भी दिलचस्प है कि अध्याय 4 में, जॉन सीधे तौर पर उसका वर्णन नहीं करता है जो सिंहासन पर बैठा है।

फिर से, यशायाह और यहजेकेल का अनुसरण करते हुए, जॉन, इसके बजाय, यह दिलचस्प है कि जॉन का ध्यान बहुत तेज़ी से जाने वाला है और सिंहासन पर बैठे व्यक्ति से हटकर उसके चारों ओर जो चल रहा है उस पर जाने वाला है। तो, वह फिर से शुरू करता है, पद 2 में ध्यान दें, एक बार मैं आत्मा में था और मेरे सामने स्वर्ग में एक सिंहासन था जिस पर कोई बैठा था। और जो वहां बैठा था उसका रूप यशब और नीलमणि का सा था ; सिंहासन के चारों ओर पत्रे के समान एक इन्द्रधनुष था।

तो, ध्यान दें कि वह सिंहासन पर बैठे व्यक्ति के बारे में लगभग कुछ भी नहीं कहता है। वह इस व्यक्ति का विस्तार से वर्णन नहीं करता है। वह बस इतना कहता है कि सिंहासन पर एक बैठा है और उसकी शकल ऐसी थी।

लेकिन तुरंत, वह अपने चारों ओर घिरे इस इंद्रधनुष का वर्णन करने के लिए दूर चला जाता है। और फिर पद 4 में, वह अन्य सिंहासनों का वर्णन करना शुरू करता है, इन 24 सिंहासनों और सिंहासन के चारों ओर 24 बुजुर्गों का, और फिर चार जीवित प्राणियों का भी। इसलिए, यह दिलचस्प है कि जॉन सीधे तौर पर सिंहासन पर बैठे व्यक्ति का वर्णन नहीं करता है, बल्कि सिंहासन से बहुत तेजी से दूर चला जाता है और सिंहासन के वातावरण और परिवेश का वर्णन करना शुरू कर देता है।

सिंहासन और उस पर बैठे व्यक्ति की एक दिलचस्प विशेषता जो जॉन सामने लाता है वह यह है कि सिंहासन पर बैठे व्यक्ति की उपस्थिति को कीमती पत्थरों या कीमती रत्नों के रूप में वर्णित किया गया है। मैंने जो एनआईवी अनुवाद पढ़ा, उसमें जैस्पर और कार्नेलियन की उपस्थिति और फिर सिंहासन के चारों ओर एक इंद्रधनुष जो एक पन्ना जैसा दिखता था, शब्दों का इस्तेमाल किया गया था। अब, जाहिर है, एक स्तर पर, इस प्रकार की भाषा दृष्टि की आभा को बढ़ाती है।

यह दृष्टि की भव्यता और सुंदरता तथा जॉन जो देखता है उसके विस्मय को बढ़ाता है। लेकिन शायद हमें इससे थोड़ा और आगे बढ़ना चाहिए। और यह दिलचस्प है कि आपका ध्यान आकर्षित करने वाली दो बातें हैं।

नंबर एक, यह दिलचस्प है कि ये कीमती पत्थर, मुझे लगता है, उन पत्थरों की नींव की याद दिलाते हैं जो मंदिर से संबंधित हैं। उदाहरण के लिए, महायाजक की छाती में लगे पत्थर। अन्यत्र, यशायाह 54 जैसे ग्रंथों में कीमती पत्थरों के संदर्भ में नए यरूशलेम के पुनर्निर्माण का वर्णन किया गया है।

यहूदी साहित्य में अन्यत्र हमें मंदिर का वर्णन सोने और कीमती पत्थरों के रूप में मिलता है। तो, एक स्तर पर, कीमती पत्थर मंदिर की याद दिलाते हैं। यह भगवान का निवास स्थान है।

यह वह पवित्र मन्दिर है जहाँ भगवान निवास करते हैं, जहाँ उनका सिंहासन विराजमान है। लेकिन दूसरा, इसके साथ ही, ये कीमती पत्थर संभवतः दिव्य उपस्थिति का प्रतीक भी बनते हैं। दिलचस्प बात यह है कि ये पत्थर बाद में प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में उन पत्थरों के रूप में दिखाई देंगे जो नए यरूशलेम मंदिर को बनाते हैं जहाँ भगवान अपने लोगों के साथ रहते हैं।

तो, फिर, ये पत्थर संभवतः भगवान के विशिष्ट गुणों का प्रतिनिधित्व करने के लिए नहीं हैं जिनके बारे में हमें चिंता करनी चाहिए। जहाँ तक परमेश्वर के चरित्र का संबंध है, इसका क्या अर्थ है? इंद्रधनुष उत्पत्ति में बाढ़ के वृत्तांत और उसकी रचना के प्रति ईश्वर की निष्ठा का सुझाव दे सकता है, जो मुझे लगता है कि निश्चित रूप से यहां फिट बैठता है। क्योंकि उत्पत्ति अध्याय 6 और 12 में भगवान, इंद्रधनुष भगवान की वाचा और उत्पत्ति 1 और 2 से उनकी रचना के प्रति उनकी वफादारी के प्रदर्शन का हिस्सा था। यह दिलचस्प है कि यहां प्रकाशितवाक्य 4 में, भगवान को सभी चीजों के निर्माता के रूप में मनाया जाता है।

तो, जॉन की दृष्टि में इंद्रधनुष एक उपयुक्त तत्व है, और हम बाद में बस एक क्षण में देखेंगे कि यह महत्वपूर्ण क्यों है, लेकिन सभी चीजों के निर्माता के रूप में भगवान का जश्न मनाने में यह उचित है कि इंद्रधनुष एक के रूप में उभरेगा उत्पत्ति 6 और 9 से संकेत, एक बार फिर, अपनी

रचना के प्रति ईश्वर की विश्वासयोग्यता के संकेत के रूप में। और मैं एक क्षण में उस पर लौटना चाहता हूँ। लेकिन बात यह है कि, पत्थर, हमें शायद भगवान के चरित्र या गुणों के बारे में बहुत अधिक विशिष्ट होने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन बस एक साथ मिलकर वे अपने स्वर्गीय मंदिर में भगवान की शानदार और चमकदार उपस्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं, लेकिन समय की प्रत्याशा में कि वह प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में अपने लोगों के साथ एक नई रचना में निवास करेगा।

लेकिन जैसा कि हमने कहा, अब हम सिंहासन और उसके रहने वाले से दूर जा रहे हैं, जिसका वर्णन करने में जॉन झिझकते हैं, लेकिन सर्वनाशी साहित्य में यह आम बात है। अक्सर सर्वनाशी साहित्य में, सिंहासन पर बैठे व्यक्ति का वर्णन नहीं किया जाता है, बल्कि उसके आस-पास की हर चीज़ और उसकी प्रतिभा और चमक की उपस्थिति का वर्णन किया जाता है। फिर आगे क्या होगा? जॉन का ध्यान सिंहासन और उस पर बैठे व्यक्ति से हटकर उसके चारों ओर की चीज़ों पर केंद्रित हो जाता है।

जॉन ने दो अलग-अलग समूहों को अलग किया, चौबीस बुजुर्गों या चौबीस सिंहासनों का एक समूह और उन सिंहासनों पर बैठे चौबीस बुजुर्गों का समूह, और फिर चार जीवित प्राणियों का एक और समूह। अब, एक स्तर पर, इन दोनों समूहों से निपटना आसान है क्योंकि इस प्रश्न का उत्तर देना आसान है कि ये क्या करते हैं? ये दो समूह, चौबीस प्राचीन और चौबीस सिंहासन और चार जीवित प्राणी, क्या करते हैं? इस दृष्टि से उनका क्या कार्य है? खैर, जब आप इसे बारीकी से पढ़ते हैं, तो ऐसा लगता है कि उनका एक ही कार्य है और वह है सिंहासन पर बैठे व्यक्ति की निरंतर प्रशंसा करना। दिन-रात सिंहासन पर बैठे एक की पूजा करते हैं।

वे भगवान की पूजा करते हैं। उनका प्राथमिक कार्य ईश्वर की संप्रभुता को स्वीकार करना, स्वीकार करना और उसकी पूजा करना है जो संपूर्ण ब्रह्मांड का निर्माता, संप्रभु निर्माता है। ये समूह कौन हैं, इसकी पहचान करने में कठिनाई आती है।

सिंहासन पर बैठने वाले ये चौबीस बुजुर्ग कौन हैं? ये चार जीवित प्राणी कौन हैं जिनका वर्णन अजीब भाषा में किया गया है? अब, इस बिंदु तक, उम्मीद है, आप इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि ये समूह किसी न किसी का प्रतीक हैं। और सवाल यह है कि ये समूह क्या या किसका प्रतिनिधित्व करते हैं या ये दोनों समूह क्या या किसका प्रतीक हैं? स्पष्ट प्रश्न यह है कि क्या ये समूह देवदूत प्राणियों के प्रतीक हैं, या वे मनुष्यों या मनुष्यों के किसी समूह के प्रतीक हैं? या फिर, क्या हमें निर्णय लेने और एक या दूसरे समूह में बंटवारा करने से बचना चाहिए और दोनों के किसी संयोजन का सुझाव देना चाहिए? लेकिन हम चौबीस बुजुर्गों को देखकर शुरुआत करेंगे। दरअसल, प्रकाशितवाक्य की बाकी किताब में चौबीस बुजुर्ग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हम उन्हें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के सातवें अध्याय में और कुछ अन्य स्थानों पर उभरते हुए देखेंगे। लेकिन फिर, चौबीस बुजुर्गों के पास शायद उन चार जीवित प्राणियों से भी अधिक था। उनकी सटीक पहचान समझने और वर्णन करने के कई प्रयास किए गए हैं।

फिर, एक स्तर पर, हमें इसके बारे में बहुत अधिक चिंता करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि, जैसा कि हमने कहा, मुख्य बिंदु उनका कार्य है। वे जो भी हैं, दर्शन में उनका प्राथमिक कार्य ईश्वर की पूजा करना, दिन-रात उसकी संप्रभुता को स्वीकार करना, उसकी पूजा करना है जो सिंहासन पर बैठता है, जो सारी सृष्टि पर सर्वोच्च प्रभु है। यही मुख्य बिंदु है जिसे तुम्हें समझने की आवश्यकता है।

लेकिन साथ ही, मुझे लगता है कि यह पूछना उपयोगी और आवश्यक है, अच्छा, यह कौन हो सकता है? क्या हम इन चौबीस बुजुर्गों को पहचान सकते हैं? एक विकल्प, और फिर, मैं सभी संभावनाओं का सर्वेक्षण नहीं करने जा रहा हूँ। मैं बस कुछ पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ जो मुझे लगता है कि शायद सबसे अधिक संभावित हैं और जो हमें अध्याय चार में मिलता है उसके लिए स्पष्टीकरण प्रदान कर सकते हैं। एक संभावना यह है कि चौबीस बुजुर्ग केवल स्वर्गीय प्राणी हैं जो पुजारियों के चौबीस पाठ्यक्रमों पर आधारित हैं जो पुराने नियम में पाए जाते हैं, विशेष रूप से 1 इतिहास 23.6 और 1 इतिहास 24.7-18 में। तो, 1 इतिहास में पुजारियों के चौबीस पाठ्यक्रम इन चौबीस स्वर्गीय प्राणियों के लिए एक मॉडल प्रदान करते हैं जो स्पष्ट रूप से पुजारी के रूप में कार्य करते हैं।

अब, इसमें कठिनाई यह है कि यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि ये चौबीस बुजुर्ग पुजारी के रूप में कार्य करते हैं। एक तरह से, यह तथ्य कि वे भगवान की स्तुति करते हैं और भगवान की पूजा करते हैं, एक पुरोहिती कार्य का सुझाव दे सकता है, लेकिन वे कुछ अन्य चीजें नहीं करते हैं जिनकी एक पुजारी से अपेक्षा की जा सकती है, जैसे कि बलिदान चढ़ाना या कुछ अन्य चीजें जो वास्तव में होती हैं प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में ऐसा होता हुआ पाया जाता है। दूसरों ने सुझाव दिया है कि यह वास्तव में चर्च का प्रतिनिधित्व करने वाले चौबीस बुजुर्ग हैं जिन्हें अब स्वर्ग ले जाया गया है।

यह अक्सर एक निश्चित दृष्टिकोण से जुड़ा होता है कि हम रहस्योद्घाटन की व्याख्या कैसे करते हैं, जिसे कोई भी देख सकता है, उदाहरण के लिए, लेफ्ट बिहाइंड श्रृंखला में। यानी प्रकाशितवाक्य 4-22 में ये सभी अंत-समय की घटनाएं घटित होने से पहले, चर्च को वास्तव में स्वर्गारोहित कर लिया जाएगा। वर्तमान में, परमेश्वर चर्च के साथ व्यवहार कर रहा है, लेकिन इससे पहले कि वह अपना क्रोध प्रकट करता, इससे पहले कि वह अपना निर्णय सुनाता, इससे पहले कि वह इस्राएल राष्ट्र के साथ फिर से व्यवहार करना शुरू करता, इससे पहले कि यह सब घटित होता, अंत समय के एंटीक्रिस्ट और से पहले दुश्मन आता है, इससे पहले कि ऐसा कुछ हो, अध्याय 4 से शुरू करके, भगवान उसके चर्च को हटा देगा, और चौबीस बुजुर्ग यही हैं।

फिर, यदि कोई व्याख्या की उस पंक्ति का अनुसरण करता है तो यह आश्चर्य करने वाला हो सकता है। यदि आप आश्चर्य हैं कि 4-22 केवल भविष्य है और यह मुख्य रूप से ईश्वर इज़राइल के साथ व्यवहार कर रहा है और ईश्वर मानवता पर अपना फैसला सुना रहा है जिससे चर्च बच जाएगा, तो चौबीस बुजुर्गों को चर्च का प्रतिनिधित्व करते हुए देखना वैध हो सकता है निष्कर्ष। तीसरी संभावना यह है कि चौबीस बुजुर्ग इज़राइल और चर्च के स्वर्गीय प्रतिनिधि हैं।

याद रखें, हमने सुझाव दिया था कि सर्वनाश साहित्य सांसारिक वास्तविकताओं के स्वर्गीय समकक्ष या स्वर्गीय वास्तविकता को प्रदर्शित करने या प्रस्तुत करने के लिए कार्य करता है जो सांसारिक वास्तविकता का समकक्ष है। और इसलिए, यह हो सकता है कि हमारे पास यहां जो कुछ है वह ईश्वर के सांसारिक लोगों के स्वर्ग में प्रतिरूप या समकक्ष या प्रतिबिंब है। उदाहरण के लिए, हमने सात चर्चों के सात स्वर्गदूतों को देखा, सात स्वर्गदूत सांसारिक चर्चों के सात स्वर्गीय प्रतिनिधि थे।

और इसलिए, यहां हमारे पास ईश्वर के सांसारिक लोगों के स्वर्गीय प्रतिनिधि हो सकते हैं, यानी, इज़राइल, पुराने नियम से इज़राइल राष्ट्र, साथ ही एक चर्च भी। तो, बारह को जोड़ने पर आपको चौबीस मिलता है। याद रखें, हमने कहा था कि बारह परमेश्वर के लोगों की संख्या है।

तो, इज़राइल की बारह जनजातियाँ और चर्च का प्रतिनिधित्व करने वाले बारह प्रेरित, स्पष्ट रूप से, कुल मिलाकर चौबीस होते हैं। और इसलिए, चौबीस बुजुर्ग इज़राइल और चर्च के स्वर्गीय प्रतिनिधि हैं। चौथा विकल्प यह है कि ये केवल देवदूत प्राणी हैं जो स्वर्गीय दरबार से संबंधित हैं।

जब कोई 1 राजा 22:19 जैसे पाठ पढ़ता है, लेकिन एक अन्य पाठ, यशायाह अध्याय 24:23 भी पढ़ता है, तो ये दोनों स्पष्ट रूप से स्वर्गीय दरबार या स्वर्ग को चित्रित करते हैं, जिसमें भगवान अपने सिंहासन पर बैठे हैं और उनके चारों ओर एक स्वर्गीय दरबार है। उदाहरण के लिए, यशायाह अध्याय 24 और श्लोक 23 एक समान स्थिति प्रदान कर सकते हैं या जो पाया जाता है उसके लिए पृष्ठभूमि प्रदान कर सकते हैं। तो, 24 श्लोक 23 में, हम पढ़ते हैं, मैं वापस आता हूँ और 22 पढ़ता हूँ।

और दिलचस्प बात यह है कि इन छंदों को अक्सर यशायाह के सर्वनाश के रूप में लेबल किया गया है। पद 22: वे पृथ्वी की सारी जातियाँ और राजा एक साथ झुण्ड में इकट्ठे किए जाएंगे, वे कालकोठरी में बन्दियों की नाई एक साथ इकट्ठे किए जाएंगे। वे कारागृह में बन्द कर दिये जायेंगे, बहुत दिनों के बाद दण्ड पायेंगे।

चन्द्रमा लज्जित होगा, सूर्य लज्जित होगा, क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा सिख्योन पर्वत पर और यरूशलेम में और उसके पुरनियों के साम्हने महिमापूर्वक राज्य करेगा। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि यह चित्रण सिंहासन पर बैठे ईश्वर का है और उनके चारों ओर उनके स्वर्गीय दरबार के बुजुर्ग हैं। और यही वह मॉडल है जिसे हम प्रकाशितवाक्य के अध्याय 4 में 24 बुजुर्गों के साथ पाते हैं।

तो, यह एक देवदूत प्राणी होगा, एक स्वर्गीय अदालत जो अपने सिंहासन पर बैठे भगवान को घेरे हुए है और इन देवदूत प्राणियों से घिरा हुआ है। ऐसी अन्य संभावनाएँ हैं जिन्हें हम समझा सकते हैं, लेकिन मैंने केवल उन मुख्य संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित किया है जो मुझे लगता है कि सिंहासन पर बैठे 24 बुजुर्गों को समझने के लिए एक संभावित पृष्ठभूमि प्रदान कर सकती हैं। फिर से, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि जो महत्वपूर्ण है वह इतना नहीं है कि हम सटीक रूप से बता दें कि ये पृष्ठभूमि में कौन हैं, जितना कि हम उन्हें याद करते हैं और उनके कार्य को कहते हैं।

प्राथमिक कार्य यह है कि वे परमेश्वर के सिंहासन को घेरें। वे परमेश्वर की संप्रभुता को स्वीकार करते हैं। एक तरह से, वे उस व्यक्ति की पूजा करने में स्वर्ग का नेतृत्व करते हैं जो सिंहासन पर बैठा है, जो पूरे ब्रह्मांड पर एक संप्रभु शासक है।

अगले भाग में, फिर, मैं 24 बुजुर्गों पर थोड़ा और विस्तार से गौर करना चाहता हूं और देखना चाहता हूं कि क्या हम इन विभिन्न विकल्पों में से एक को फिट कर सकते हैं? यह हमें यह समझने में कैसे मदद करता है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में क्या चल रहा है?

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह सत्र संख्या 8, रहस्योद्घाटन 4 और 5, एक परिचय है।